धनुर्मास धून
२०१६ - २०१७

मूल्य रु. ५-०० मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख सलंग अंक ११७ जनवरी-२०१७

प्रकाशक :
श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) समग्र उत्तर गुजरात के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल का स्नेह मिलन समारंभ विसनगर में संपन्न हो गया, उस अवसर पर सभा में प्रेरणारुप आशीर्वाद देते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री तथा युवकों द्वारा स्वनिर्मित श्री नरनारायणदेव एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की कलाकृति के रुप में अर्पण करते हुये युवक ।(२) प्रयाग श्री स्वामिनारायण मंदिर के प्रथम पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट दर्शन ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १० ● अंक : ११७

जनवरी-२०१७

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अनुक्रमणिका

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	कौशल देश	०६
०४.	हे जीव ! करुणा के सागर का भजन कर	०८
०५.	आत्यंतिक कल्यार्ण को प्रकाशित करने वाले सत्सशास्त्र	११
०६.	आचार्यश्री की महिमा तथा संत, आचार्य के साथ कैसा व्यवहार करना इसका उपदेश	१३
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०८.	सत्संग बालवाटिका	१६
०९.	भक्ति सुधा	१८
१०.	सत्संग समाचार	२१

अस्मदीयम्

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में धनुर्मास महोत्सव का आपके हाथ में अंक आयेगा । उस समयतक यह मास अर्थात् धनुरमास पूरा हुआ रहेगा । भगवान श्री स्वामिनारायण के नाम की भजन-स्मरण जिन्होंने पूरे मास तक किया उनका बेलेन्स अवश्य बढा होगा । वर्ष में एकबार पूरे महीने अपने इष्ट देव श्री स्वामिनारायण भगवान के नाम ता स्मरण करने से आने वाली अनेक आपदायें दूर हो गई ।

धंधा-नौकरी तथा परिवार के छोटे-बड़े प्रश्न या समस्या के बीच में भी भगवान को भूलना नहीं चाहिए । हम कुछ करते नहीं है क्योंकि हमारा कुछ है ही नहीं जो कुछ हो रहा है वही श्रीहरि का किया कहा जायेगा ऐसा समझ कर जीवन जीना चाहिये, इसी में महानता है ।

हमें प्रतिदिन २७३ में से एक वचनामृत वांचने का व्यसन रखना चाहिये ।

वचनामृत में (लोया-१) संप्रदाय के महान पंडितवर्य सगु. नित्यानंद स्वामीने श्रीजी महाराज से प्रश्न किया कि ए कामादिक शत्रुने टाल्या नो शो उपाय छे ? तब श्रीजी महाराजने कहा कि ''ए कामादिक शत्रु तो तोटले, जो एने ऊपर निर्दय थको दंड देवाने तत्पर रहे । जेम धर्मराजा छे ते पापी ने मारवाने अर्थे दंडे लईने रात दिवस तैयार रहे छे, तेम इन्द्रियो कुमार्गे चाले तो इन्द्रियो ते दंड दे अने अंतकरण कुमार्गे चाले तो अंतकरण ने दंड दे तेमां इन्द्रियोने कच्छ-चांद्रायणे करीने दंड दे अने अन्तःकरण ने विचारे करीने दंड दे, तो ए कामादिक शत्रु नो नाश थई जाय अने पोताने भगवानना निश्चय करीने संपूर्ण कृतार्थ माने ।

इसलिये हमे प्रतिदिन वचनामृत का अनुसंधान रखकर कामादिक शत्रुओं को टालने का प्रयत्न करते रहना चाहिये ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसम्बर-२०१६)

६ स्वदेश आगमन।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पदार्पण।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर कनीपुर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (पाटीदार) पाटोत्सव प्रसंग में पदार्पण।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१२ वडोदरा हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण।

१४ श्री स्वामिनारायण हवेली (काष्ठ कला का) मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीयोर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१६ विसनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण। सायंकाल भुज पदार्पण।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पदार्पण।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मारुसणा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२०-२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) संचालित कन्या छात्रालय के दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगांव पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५-२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज तथा मांडवी (कच्छ) कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२८ सोलैया गांव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

३० से ३१ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पदार्पण।

३१ से ४ जनवरी-१७ अमेरिका के धर्मप्रवास में पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसम्बर-२०१६)

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर धनुर्मास धुन प्रारंभ प्रसंग पर पदार्पण।

१८ विसनगर गाँव में स्नेहमिलन प्रसंग पर पदार्पण।
कुबडथल श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाँव पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५ आनंदपुरा गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

कौशलदेश

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

कुश शब्द का अर्थ दर्भ होता है । गुजराती में दाभडो कहते हैं । पुराणो में दर्भ को अत्यंत पुण्यशाली तथा तन, मन, जीवन का संरक्षक बताया गया है । पूजा कर्म में या पुरश्चरण में या हवन में दाहिने हाथ में पवित्री के रुप में धारण किया जाता है । दर्भ के आसन पर यज्ञानुष्ठान करने से अतिशीघ्र सिद्धि मिलती है । कुशासन सभी आसनों से पवित्र माना जाता है । इसके अलांवा सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण के सूतक में वातारण के प्रदूषण से रोकने के लिये कुश को सभी पदार्थो में डाला जाता है । इससे सभी प्रकार के जंतुओ से रक्षा होती है । यह सभी वनस्पती-औषधियों में श्रेष्ठ है । परमात्मा ने इसे मानव सृष्टि के उपकारार्थ दिया है।

दर्भ (कुश) सरयू नदी के तटवर्ती प्रदेश तथा गंगाजी के किनारे वाले विस्तार में बहुत अधिक मात्रा में उत्पन्न होता है । परमात्मा ने जिस कुश को जहाँपर अतिमात्रा में दिया है और जहाँपर इसके रख रखाव करने में लोग कुशल हो उस पुण्यशाली तथा अतिपवित्र देवभूमि को ही कौशल देश कहा जाता है, अर्थात् कुश लाने में जो चतुर लोग हो (कुशल हों) उन्हें पुराणो में कौशल कहा गया है । जो भूमि कुश से ढंकी हो उसे कुशल कहा जायेगा । कुश का अर्थ कौशल कहा जायेगा । ऐसे कौशल देश के मध्य विस्तार को ही अवधपुरी अर्थात् जो व्यक्ति जीवन में कुश का यथार्थतः उपयोग करे उसका कभी कोई वधन हीं कर सकता, ऐसी वह अवधपुरी जहाँ पर कुशाच्छादित धरती आज भी विद्यमान हैं । उसी अवधपुरी में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम प्रगट होने का निश्चय किये ।

इसी तरह अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने भी अवधपुरी के उत्तर कोशल देश में ही प्रगट हुये जहाँ पर कुश का वन सुशोभित हो रहा है । ''कौशल देश में धर्यो अवतार रे'' । इस तरह की अनंत रचनाये अपने संतो ने की है।

शास्त्रो में कुशलाने की विधिभी बताई गई है. आप लोग निर्णय में श्रावण कृष्ण पक्ष अमावस्या को ''कुशग्राही'' अमावस्या के रुप में वांचते होंगे । परंतु उसकी महिमा का क्याल न होने से यह होता होगा कि केवल पंडितो के लिये लिखा होगा । उनके विषय की वात होगी । कुशग्राहीणी के दिन कुशको लाना तथा अन्य दिन कुश को उखाडना निषेधबताया गया है । कुशग्राहिणी के पर्व में आमंत्रित कुश को घर में रखा जाय तो उसके प्रभाव से जहरीले जंतु घर में प्रवेश नही कर सकते । इसके अलांवा आभिचारिक कृत्य भी इसके प्रभाव से निष्फल हो जाता है । घर के अनाज इत्यादि जो भी वस्तुयें है उनके समीप में कुश को रखा जाता है।

गुजरात में नर्मदाजी के किनारे खूब दर्भ होता है । उसमें से पूजा का आसन तथा अन्य वस्तुयें बनाई जाती है । इसका मतलब यह कि जीवन में अत्यंत उपयोगी कुश की उपेक्षा करने से मनुष्य को अनेक प्रकार के संकट का सामना करना पडता है।

पद्मपुराण में लिखा है –

कुशल मूले स्थितो ब्रह्मा कुशल मध्ये जनार्दनः ।
कुशाग्रे शंकरो देवः त्रयो देवाः कुशे स्थिताः ॥

कुश के मूल में ब्रह्मा, मध्य में जनार्दन (विष्णु) तथा अग्र भाग में शिव, इस तरह तीनो देवों का जिस में निवास हो वह अवश्य पूजनीय है।

हम जब जप-तप-होम करते रहते है उस समय पुण्य चोरी करने वाले दैत्य साधक के अगल-बगल घूमते रहते हैं। इसलिये साधक कुशकी पवित्री (अंगुठी) पहनकर कर्म करते हैं ? कर्म करने वाले साधक की भगवान शिव त्रिशूल से, विष्णु चक्र से तथा इन्द्र वज्र से रक्षा करते हैं।

कुशके उत्पत्ति की कथा पुराणों में बताई गई है . आदि काल में सृष्टि की रचना के समय हिरण्याक्षनामक दैत्य ने पृथ्वी को पानी मेंडुबा दिया था। बाद में भगवान विष्णुने वाराहरुप धारण करके हिरण्याक्ष का वधकिया और पृथ्वी को पानी में से बाहर लाकर स्थिर किया। भगवान की विशाल दिव्य काया ''वाराह'' अर्थात् सूकर के रूप में थी, जिससे पृथ्वी के ऊपर उनके केश गिरे और जहाँ-जहाँ गिरे उस नदी के किनारे वाले तटवर्ती प्रदेशो में कुश के रुप में अवतरित हो गये।

दूसरा प्रसंग यह भी है कि देवता तथा दैत्य मिलकर समुद्र का मंथन किये। उसमें से चौदह रत्न निकले। उन सभी रत्नो का समान भाव से आबंटन किया गया। बाद में भगवान धन्वतरी अमृत कुंभ लेकर प्रगट हुए। उस अमृत कुंभ को कुश के आसन पर रखा गया। अमृत बांटने में विवाद हो गया तो भगवान विष्णु मोहिनी का रुप धारण करके देवताओं को अमृत का पान कराया और अमृत कलश को दर्भ के ऊपर रखकर अदृश्य हो गये। उस समय अमृत के बिन्दु उस कुश के ऊपर गिरे थे जिससे पवित्र संजीवनी धन्वंरी औषधिके रुप में माना जाता है। कौशल शब्द का दूसरा अर्थ यह भी है कि जहाँ पर ''कुश'' अधिक श्रेष्ठ-उत्तम गुणवाला उत्पन्न होता है। उस प्रदेश को अर्थात् सरयू के तटवर्ती विस्तार को कौशल देश कहा जाता है। कुश शब्द ''कोश'' के रुप में संस्कृत में व्यवहृत होता है। कुश से अलंकृत भूमि को कौशल देश कहा जायेगा।

जिस तरह तुलसी के वन को वृंदावन भूमि कहा जाता है जहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण का अवतार हुआ, उसी तरह मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामने तथा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायणने कुश के वन से पवित्र ऐसी भूमि कौशल देश में जन्म धारण किया।

आज के समय में मनुष्य की कैसी दुर्भाग्य है कि भगवान ने जिस पवित्र औषधिको हमारे जीवन से जोडा उसका उपयोग करने का कभी विचार भी नही करता।

जहाँ पर कुश होता है वहाँ पर इस औषधिके माध्यम से वेद आयु की वृद्धि तथा दूषित वातावरण को पवित्र करके जंतुओ से रक्षा करते हैं।

पूजा विधिके प्रसंग में पारिजात के अनुसार ''कुश'' के अभाव में ''दुर्वा'' का उपयोग, बिल्वपत्र, कमलपत्र, धान का लावा, पान का पत्ता इत्यादि का उपयोग किया जा सकता है।

कुश वनस्पति से पूजा विधितथा अनेक प्रकार के संस्कार किये जाता है। मूर्ति प्रतिष्ठा विधिमें न्यास तथा आह्वान करने में कुश सर्वश्रेष्ठ है।

अयोध्या की अधिष्ठातृदेवी कुशादेवी आज भी पूजित हैं। भगवान श्रीराम के एकपुत्र का नाम कुश रखा गया था। अयोध्या पूर्वका लमें कुशावली नगरी के नाम से जानी जाती थी। सरयू के उत्तर किनरे के विस्तार को उत्तर कोश प्रदेश कहा जाता है। इसका मतलब छपिया उत्तर कोशळ देश में आता है। दक्षिण भागहत्तर कुशल देश है। भगवान श्रीरामने किष्किन्धा पर्वत पर हनुमानजी के साथ प्रथम मुलाकात में अपना परिचय देते समय कहा कि -

''कौशलेदेश दशरथ के जाये।
हमपित वचन मानि बन आये॥''

शास्त्रों में आध्यात्मिक अर्थ में कोश को आवरण (रक्षण) करने वाले के अर्थ में कहा गया है। जिस तरह आत्मा के अगल-बगल पांच कोश, पांच आवरण, वे पांच कोश (१) अन्नमय कोश अर्थात् स्थूल शरीर (२) प्राणमय कोश अर्थात् प्राण (३) मनोमनय कोश अर्थात् मन (४) विज्ञानमय कोश अर्थात् ज्ञानेन्द्रिय के साथ सूक्ष्मशरीर-बुद्धि (५) आनंदमय कोश अर्थात् कारण शरीर अथवा सुषुप्ति। इस तरह की व्याख्या की गही है। कोश को धन-संपत्ति का खजाना भी कहा जाता है। अर्थात् पैसे का नियमन करने वाले को कोषाध्यक्ष नाम से संबोधित किया जाता है। इस तरह अनगिनत अर्थ देखने में मिलता है। परंतु जिसकी महत्ता दर्भ (कुश) (कोश) की उपमा के अर्थ में कही जाती है

हे जीव ! करुणा के सागर का भजन कर

– शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

भगवान श्री स्वामिनारायण ने सखा कविवर श्री ब्रह्मानंद स्वामी जो पूर्वाश्रम में लाडूदान के नाम से समग्र गुजरात में प्रतिष्ठित थे । जहाँ जाते राजा महाराजओं के यहाँ शास्त्रार्थ में सभी को पराजित कर देते थे । समर्थ कवि भी थे । विद्या में पारंगत होकर भगवान स्वामिनारायण की पराक्षा करने के लिये आये वहीं पर उन्हें यह आभास हो गया कि ये साक्षात् अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति परमात्मा हैं । इसके बाद उन्हीं की उपासना भक्ति करके आत्यंतिक मोक्ष के मार्ग पर चल पडे । संसार से अर्थात् कुटुंब-परिवार-धन-संपत्ति इत्यादि का परित्याग करके विषय सुख का परित्याग करके भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणों में समर्पित होकर उहीं की आज्ञा पालन करते हुये जीवों के अपमान तिरस्कार सहते हुये अन्यजीवों को परमात्मा की पहचान कराते रहे । इसके साथ ही पिंगल शास्त्र का सहयोग लेकर गुजराती भाषा तथा व्रज भाषा में अनेकों कीर्तन बनाकर शास्त्र को समृद्ध किये । इसी तरह श्रीहरि की आज्ञा से शिल्पशास्त्र का आश्रय लेकर वडताल, मूली, जूनागढ इत्यादि धामों में महामंदिरो का निर्माण कार्य कराकर उपासना को दृढ किये । ऐसे श्रीहरि के स्वरुप को पहचान कराने वाले संस्कृत के स्तोत्रों की भी रचना की । उन्हीं में से एक स्तोत्र का यहां जिस में यह बताया गया है कि भक्ति तथा भजन किसकी करनी चाहिये । उसे लिख रहेहैं ।

इस जगत में भजन करने लायक कौन है, यह समझाने के लिये यह स्तोत्र है, जिसे हम सार्थ आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं-

श्रीनरनारायणमृषिराजं सुखदमहो करुणा रसभाजं ।

मानसहरिं भजबद्रिपतिं हरिललनापुरईभगतिम् ॥

मानस ॥१॥ ध्रुवपदम् ॥

सर्वोपरी सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण की तपस्या करने वाले ऋषि स्वरुप श्री नरनारायणदेव की भजन करने की प्रेरणा से कह रहे हैं कि हे जीव ! तूं बद्रिपति श्रीहरि की भजन कर । कारण यह कि ऋषि के रूप में प्रत्यक्ष बिराजमान परमात्मा की जो भजन करता है उसके ऊपर भगवान प्रसन्न होकर महा सुख प्रदान करते हैं । ऋषिराज – अपनी भारतीय संस्कृति में ऋषि – महात्माओं का बहुत महत्व है, वे सदा परोपकार पारायण रहते हैं । ''परोपकाराय सतां विभूतयः । इसीलिये उन्हें ऋषिराज कहा गया है । सुखदमहो – भगवान श्री नरनारायणदेव जीव को इतना सुख प्रदान कर देते हैं कि जीव को प्रभु के प्रति अहोभाव आजाता है । करुणा रसभाज – इस प्रकार मोक्षरुपी सुख परमात्मा देते हैं वह जीव के साधन से नही अपितु अत्यंत प्रसन्न होकर अति करुणा करके रस वर्षाते हैं । अर्थात् करुणा करके रस की वर्षात करने वाले मानस हरि – इसलिये हे मनुष्य ! तूं अपने मन में श्री नर तथा नारायण के रुप में जो तप कर रहे हैं उन्हीं श्रीहरि की भजन कर । भजबद्रिपतिं – पृथ्वी के ऊपर प्रगट होकर दो स्वरुप को धारण करके बद्रिनाथ धाम में तपस्वी का रुप धारण करके जगत के हित के लिये तप करने वाले श्रीहरि की भजन कर । हरि ललनापुरई – भक्तिम् – भगवान श्रीहरि के वात्सल्यपूर्ण स्नेह से युक्त जिस तरह माता मूर्ति देवी लालन करती है वही भक्ति भाव परमात्मा श्री नरनारायणदेव ऋषि में हो तो मनुष्य को दिव्य सुख-धाम की प्राप्ति हो । ध्रुवपदम् – अचल पंक्ति अर्थात् टेक इस पंक्ति को प्रत्येक श्लोक की पूर्णता पर बोलना है । इसके साथ ही अर्थ का अनुसंधान भी रखना है ।

नटवरराजमखिलजनवन्दयं ।

निजजनमोक्षपथोज्जितमाद्यं ॥ मानस ॥२॥

नटवरराजम् – नरजित तरह जगत में अनेक प्रकार

के वेश को धारण करके नाटक करता है, उसी तरह अनंतकोटी ब्रह्मांड में अलग-अलग प्रकार के अवतार धारण करने में समर्थ है। इसीलिये उन्हें नरो का राजा कहा गया है। अखिलजन वन्द्यम् - अनंतकोटि ब्रह्मांड के समस्त जीव जिनकी वंदना करते है, उपासना भजन-भक्ति करते हैं ऐसे भगवान श्री नरनारायण ऋषि के रुप को धारण करके सदा विराजित रहते हो। निजजन - अपने आश्रित जीवों को जो अपने स्वरुप का निरंतर ध्यान-भजन-भक्ति, करते हैं उन जीवों के लिये, मोक्षपथः- आत्यंतिक मोक्ष के मार्ग पर चलने के लिये जैसा कि प्रस्थानत्रयी, गीता, उनिषदम्, ब्रह्मसूत्र में कहा गया है। आप शक्तिप्रदान करते हैं। उज्जित माद्यं - जो मोक्ष का मार्ग आदि काल से ही शास्त्रों में वर्णित है, उसी मार्ग पर चलने की आप पहचान कराते हैं।

निगमकदम्बककृतगुणगानं।

श्रितजनदत्त महासुखदानं ॥ मानस ॥३॥

निगमकदम्बक - निगम-आगम अर्थात् वेद उपनिषद् इत्यादि शास्त्रों में जो वर्णित है मानों वह सभी आपके गुण का गान है। कृतगुणगानम् - जिन-जिन लोगों ने आपके स्वरुप का गुण-गान किया है उन सभी के सभीप्रकार के मनोरथ आपकी कृपा से पूर्ण हुए हैं। श्रित जनदत्त-आपकी भजन-दर्शन-उपासना भक्ति रुप आश्रय प्राप्त करने वाले जीवमात्र को संसार के विषय सुख से दूर करके अपनेधाम का सुख प्रदान करते हैं।

महासुखदानम् - जगत के सुख तथा पंचविषय के सुख के पीछे अनेक जन्मों से दौडने वाले जीवों का क्षणिक सुख से हटाकर महासुख अर्थात् जो कभी नाश को न प्राप्त हो ऐसे सुख अक्षर धाम के सुख को प्राप्त कराते हैं।

धृतसितवाससममतुलमुदारं।

कनकविभूषणलज्जितमारं ॥ मानस ॥४॥

धृतसितवास - बद्रिकाश्रमधाम में जगत के हित के लिये दो स्वरुप धारण करके नैष्ठिक व्रती तप-परायण होकर सभी को सदा सुख शांति मिले इस हेतु से भी आप श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। सममतुलमुदारम् - जगत के जीव प्राणी मात्र के ऊपर समभाव रखते हैं। जिसकी कोई तुलना न कर सके ऐसी उदार भावना हृदय में सदा आपके रहती है। कनकविभूषण - सुवर्ण के अनेक आभूषण - मुकुट - हार, कडा, अंगुठी इत्यादि से सुशोभित आप है और सुवर्ण सिंहासन पर बिराजमान भी रहते हैं।

लज्जितमारम् - वस्त्र - आभूषण तथा सुवर्ण सिंहासन पर बिराजमान आपकी शोभा कामदेव को भी लज्जित करने वाली है।

कमलदलोपमनयनविभान्तं।

रदनततप्रभयापरिकान्तं ॥ मानस ॥५॥

कमलदलोपमनयन - कलमदल की पंखुडी के समान आपके विशाल नेत्र है, जिन नेत्रों से आप कृपाभरी द्रष्टि से अपने भक्तों को देखते हैं। विभान्तम् - हे श्री नरनारायण ऋषि ! इस प्रकार की शोभा से युक्त आप दर्शन देते हैं। रदनतत - जीवों के हृदय में अनादिकाल से अज्ञान को नष्ट करके प्रकाश प्रदान करने वाले प्रभया - दिव्य प्रभाव से अज्ञान के आचरण को दूर करने वाले परिकान्तम् - जिस के हृदय में से अज्ञानरुपी माया - अंधकार नष्ट हो गया है, ऐसे शुद्ध विचारवाले आपके आश्रितभक्त बनाते हैं।

मृगमदचन्दनतिलकविशोभं।

भृकुटीकटाक्षसुरारिविलोभं ॥ मानस ॥६॥

मृगमदचन्दन - प्रातः काल में नित्यकर्म करके विराजमान होने वाले आपके विशाल भाल में मलयागिरि चन्दन जो कस्तूरी से संपृक्त होने से अत्यंत सुशोभित हो रहा है। तिलक विशोभम् - आपके मस्तक पर जो तिलक है वह विशेष प्रकार की शोभा को प्राप्त कर रहा है। जिसका दर्शन करके भक्तजनों के हृदय में अत्यन्त शांति मिलती है। भृकुटी कटाक्षः-नेत्रों के कोने वाले भाग से देवों को अपने अपने कार्य में लगजाने हेतु इशारा मिलता है, जिससे देवता अपने अपने कार्य में लग जाते हैं। सुरारिविलोभम् - देवताओं के जो शत्रु दानव उनको अपने आंखो के कटाक्ष मात्र से अनुकूल - वश में करके अपने अनुकूल आचरण कराकर आज्ञा का पालन कराते हैं।

हृदयमनोहर सुमनः सुहारं।

मुनिवरवन्दित चित्रविहारं ॥ मानस ॥७॥

हृदयमनोहर - हे ऋषिराज ! भगवान श्री नरनारायण महा प्रभु आपका स्वरुप मन को स्थिर करने वाला है। जिससे भक्तों के, ऋषियों के, योगियों के, सिद्धो के, अक्षरमुक्तों के मन को अपनी तरफ खींच लेता है। सुमन सुहारम् - मन को अच्छा लगनेवाला सुंदर सुगंधित पुष्पों से सुशोभित भव्यातिभव्य श्रेष्ठ पुष्पहार हृदय के ऊपर धारण किये हुये हैं, जिसे देखकर - मुनिवर वंदित - संसार के सुख तथा विषयों से विरक्त होकर मौनरुप से मात्र जो आपके स्वरुप का ही वर्णन करते रहते हैं ऐसे ऋषि-मुनिजो आपके चरणों का निरंतर वंदन करते रहते हैं। चित्रविहारम् - हे प्रभु ! आपका दिव्य तथा अद्‌भुत स्वरुप का दर्शन करने के लिये अमर मुक्त, ऋषि मुनि तन्मय होकर निश्चल भाव से आपके स्वरुप का ध्यान करते रहते हैं। उनके आंख का हाव भाव विचलित नही होता।

ब्रह्ममुनिनित्यकृतपरिचारं।
शमितनिजाश्रितसकलविकारं ॥ मानस ॥८॥

ब्रह्ममुनि - तीन प्रकार की देह तथा तीन प्रकार की अवस्था से अपने जीवात्मा को अलग करके ब्रह्मरुप ऐसे ब्रह्मानंद स्वामी जगत के जीव को कहते हैं कि हे भक्तों ! मैं नित्य सदा, सर्वदा इसी स्वरुप की उपासना तथा भक्ति करता हूं। नित्यकृत परिचारम् - नित्य-सदा प्रातःकाल में होने वाले सर्व विधपूजा जो भक्ति करते हैं, ऐसे भक्त अर्थात् साष्टांग प्रणाम प्रदक्षिणा, मंत्र जप स्तुति, प्रार्थना, यज्ञ होम, ध्यान के साथ मंदिर की सेवा जिस में मंदिर में झाडूं पोछा, बरतन माजना इत्यादि शमितनिजाश्रित - अपने आश्रय में आने वाले भक्तों के सभी प्रकार के विकारो का शमन करते हैं। अर्थात् जो जीवात्मा आपका पूजन अर्चन करता है तथा आपकी आज्ञा का पालन करता है, सकल विकारम् - अन्तःकरण में रहने वाली विषय वासना संबन्धी जो भी बिकार है (काम-क्रोध-लोभ) उन सभी अंतःशत्रुओं को तथा मानसिक विकारमात्र को आप आपने दर्शन मात्र से दूर करते हैं।

श्री नरनारायण देव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर कोटा (राजस्थान) निर्माण कार्य में सेवा करने का सुवर्ण अवसर

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायणने पृथ्वी पर पधारकर अनंत जीवो के मोक्ष का मार्ग खोलकर बड़ा उपकार किया। इसके लिये अनेक उपाय बताये। जिस में से एक उपाय यह भी है कि तीर्थ स्थानों की यात्रा। भगवान श्री स्वामिनारायण के आश्रित प्रायः समग्र विश्व में निवास कर रहे हैं उन सभी के लिये श्रेष्ठतीर्थ भूमि ''छपैयाधाम'' की यात्रा के लिये जाने वाले सभी को आज के युग में सरलता रहे इस हेतु से एक रात्रि विश्राम के बाद छपैयाधाम पहुंचा जा सके - वह विश्राम स्थान ''कोटा'' राजस्थान है।

भक्तों को यात्रा में सरलता बनी रहे तथा आहार-विहार में धर्म सुरक्षित रहे इस हेतु से प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ संकल्प से तथा आशीर्वादात्मक आज्ञा से ''कोटा'' राजस्थान में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर (धर्मशाला) के निर्माण का आयोजन किया गया है। जिसका खात पूजन भी बडे धामधूम से संपन्न हुआ। वहाँ के हरिभक्तो के सहयोग से यह निर्माण कार्य श्री नरनारायणदेव के कोठार से ही संपन्न होगा। इस कार्य में तन-मन-धन से सहयोग करके देव, आचार्य, संत, भक्त सभी की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये सभी को आग्रह भरा अनुरोधहै।

सेवा करने की इच्छा वाले भक्त चेक-ड्राफट अथवा नगद रुपये कालुपुर मंदिर में अपनी सेवा लिखवाकर पक्की रसीद अवश्य प्राप्त करलें।

: स्थल :

श्री स्वामिनारायण मंदिर, महालक्ष्मीपुरम,
बारां रोड, कोटा-३२४००१ (राजस्थान)

: संपर्क :

मुनि स्वामी कालुपुर : ९९०९९७६००९
नारायण (मयूरभाई) कोटा : ९४१४१७७९१९
रघुनंदन अग्रवाल (टप्पाजी) कोटा : ९८२९०३७१७९

आत्यंतिक कल्यार्ण को प्रकाशित करने वाले सत्सशास्त्र

– गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

अगाधजल का सागर हो कहीं किनारा दिखाई नहीं देता हो उस समय नाविक को कहीं से किनारे की झलक दिखाई दे तो उसे सही दिशा मिलने की संभावना बढ जाती है । किसी के दिशाविहीन करने पर भी वह दिशा विहीन नहीं होता ।इसी तरह इस संसार सागर को पार करने के लिये आत्यंतिक कल्याण रुपी श्रीहरि के अक्षरधाम में पहुंचने के लिये श्रीहरि तथा श्रीहरि के समकालीन नंद-संतो द्वारा रचित सत्शास्त्र पथ प्रदर्शन का कार्य करते हैं । परंतु वर्तमान काल में बड़ा दुःख का विषय यह हैं । टी.वी. पेपर जैसे मीडियम का आधार मात्र देखने में मिलता है । सच्चे संतो के मुख से कथा श्रवण करे तो लाभ हो लेकिन खराब संतो के मुख से शास्त्र विरुद्ध वात सुनी जाय तो श्रोता सत्शास्त्र का अभ्यास न हो तो भ्रमित होकर कल्याण के मार्ग से गिर जायेंगे । इस लिये जिन्हे अपना इहलोक तथा परलोक सुधारना हो वे जीवन में एकबार अवश्य सत्शास्त्र का अध्ययन करें । ऐसी शिक्षापत्री में श्रीजी महाराज की आज्ञा भी है । जिससे खराब गुरु तथा खराब भगवान अपने अनुकूलन कर सकें ।

दुर्भाग्य कहिये या आशार्य कहिये कि कितनों को ज्ञान तो होता है कि इस दुकान में शुद्ध देशी घी मिलता है तथा उस दुकान में डाल्डा घी मिलता है – फिर भी स्वयं के स्वास्थ्य को बिगाडने के लिये डालडा वाली दुकान पर चले जाते हैं । इसमें उनका स्वयं का स्वार्थ होता है । उन्हें अपने कल्याण की चाहना नहीं होती, वे वर्तमान को ही देखते हैं । ऐसे लोग बड़े नेता होते हैं या अभिनेता होते हैं या तो प्रसिद्ध कथाकार होते हैं। ऐसे गुरु के स्थान पर होकर कभी भी जीव का कल्याण नहीं करवाते बल्कि ऐसे लोगों की लुभावनी वाणी में फंसकर लोग उन्हीं की तरफ आकृष्ट होते रहते हैं । ऐसे लोग असल नहीं होते फिर भी असल का रोल करते हैं । इस घोर कलिकाल में इन झुठ्ठो से वचने के लिये एकमात्र सत्शास्त्र का पठन-पाठन मात्र सहारा है । इतने छली होते हैं कि नाना प्रकार के छल से अपने चंगुल में फंसाने की कोशिष करेंगे, यदि आपके पास शास्त्र का ज्ञान होगा तो निश्चित ही आप बच सकते हैं ।

कहीं अन्यत्र जाना हो तो भी महाराजने कहां मना किया है । अपने प्रगट स्वरुप श्री नरनारायणदेव को दिये हैं ।अपने अपर स्वरुप अमदावाद तथा वडताल की गद्दी पर धर्मवंशी आचार्य को दिये । आचार्यश्री की आज्ञा में रहकर सत्संग की सेवा करने वाले सच्चे संत को दिये हैं। कलियुग में व्यक्तिपूजा का महत्व बढ गया है । शास्त्रों का अभ्यास हो तो यह ख्याल आयेगा कि प्रगट भगवान की पूजा की जाती हैं न कि व्यक्ति विशेष की इससे उसका कल्याण नहीं होता बल्कि बिगड जाता है ।

वर्तमान काल में शिष्य बनने की अपेक्षा लोगों को गुरु बनने की अधिक इच्छा रहती है । गुरु को शिष्य के कल्याण करने का ज्ञान रहता है लेकिन पूजाने की महेच्छा के कारण अहंकार आ जाता है जिससे उनका तो पतन होता ही है साथ में शिष्य का भी पतन हो जाता है । आज के नये गुरुजी लोग स्वतंत्र संस्था बनाकर असंख्य जीवों का अहित कर रहे हैं । स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने अपने काव्य में लिखा है कि आज के गुरु जो अपना ही कल्याण नहीं करपाते लेकिन शिष्यों के कल्याण करने

का ठीका लिये है, इस विषय को लेकर यमराज महाराज के पास जाते हैं, श्रीहरि उनसे कहते है –

श्रीहरि कहे धर्म सांभळो, गुरु न होय घेरो घेर ।
गुरु तो एक गोविंद छे, बीजी माया बनी बहु पेर ॥
तेम मायाये मन गमता बडी लीधा विश्व मांय वेश ।
एवा गुरु शिष्यनी तमे बीकम राखज्यो लेश ॥
गुरु कहये शुं थै गया गुरु रे, सुणो धर्म तेनी वात करुं रे ।
गुरु आ जगमांय छे घणा रे, ते तो कोडिया सह काल तडा रे ॥
जे जे बांधी अमे मरजाता रे, ते ते तोडे छे ए मनुजाद रे ।
माटे एने तो बहुं दंड देवो रे, कर्मो हरिए हुकम एवो रे ॥

श्रीहरि यमराज से कहते हैं कि मैं ही सभी जगत का गुरु हूं अन्य सभी लोग माया के वश में हैं । हमने जो मर्यादा बनाई है उसका जो अतिक्रमण करते हैं उन्हें अवश्य दंड दीजिये ।

श्रीहरिने अपने स्थान पर धर्मवंशी आचार्य को स्थापित किया है । अपने देश विभाग के अनुसार सभी त्यागी गृही आज्ञा का पालन करें ऐसी मेरी आज्ञा है ।

शास्त्रों का अभ्यास हो तो ख्याल आयेगा कि आध्यात्मिक परंपरावाले या व्यवस्थापक या धर्मगुरु जो भी कहा जाय वह मात्र धर्मवंशी आचार्य ही सर्वेसर्वा कहे जायेंगे । संप्रदाय में ऐसे भी विद्वान संत है जो अपनी कथा में विमुखों की भी प्रसंशा करने लगते हैं । वचनामृत के अनुसार विमुखों का गुणग्रहण करना भी विमुख होने जैसा ही है ।

अपने संप्रदाय की ऐसी परंपरा है कि जिस ग्रंथ का प्रकाशन करना हो उसमें धर्मवंशी आचार्यश्री का आज्ञा पत्र होना आवश्यक है । इसका कारण यह कि संप्रदाय के सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति, महाराज के वंशज इत्यादि वैशिष्ट्य होने से उनके हस्ताक्षर की ही प्रामाणिकता कही जायेगी अन्यथा आज के युग में बहुत सारे उपन्यास लिखे जा रहे हैं । जिसमें उनके व्यक्तिगत स्वार्थ छुपे रहते हैं ।

मूल संप्रदाय के देव तथा आचार्य में निष्ठा रखने वाले सभी संत विशेष रुप से कथा करने वाले संतो से नम्र प्रार्थना है कि अपनी कथा में कही भी न्यूनता करना है तो करें लेकिन देव-आचार्य की महिमा वर्णन में कमी न किया करें । उसको भावपूर्वक प्रदर्शित करें । इसका कारण यह कि श्रीहरि के अपर स्वरुप की पहचान कराने से निश्चय होगा और शरणागति होगी भक्ति-उपासना दृढ होगी । इससे सभी का आत्यंतिक कल्याण होगा । संप्रदाय की आज ऐसी मांग है कि संप्रदाय के छ अंगो का विश्लेषण न किया जाय तो सच्ची वात बाहर नहीं आयेगी, डुप्लीकेट वात का ही प्रचार होता रहेगा ।

कलियुग की ऐसी बलिहारी है कि जिसमें एक सामान्य भक्त बनने का सामर्थ्य नहीं है वह गुरु बनकर पूजित हो रहा है । जिन्हें श्रीजी महाराजने स्वयं आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जो अत्यन्त निर्मानी हैं कि उन्हें शिष्य बनाने की कोई सौख नहीं है । गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर सभा में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोसलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने कहा था कि, किसी को हमें ही पकड़े रहने की जरुरत नहीं है, परंतु कोई श्री नरनारायणदेव को आत्म समर्पित भाव से रहेगा तो हम उसे पूछते हुये आयेंगे ।

सत्शास्त्रों के वांचने या सुनते रहने से या मनन करते रहने से ही भगवान की सत्यता प्रगट होती है उनकी पहचान होती है । इसके बाद निश्चय होता है । सच्चे गुरु की परंपरा का ख्याल आता है । धर्म-भक्ति-ज्ञान-वैराग्य की वृद्धि भी तभी होती है । इस लोक में सुखी होकर अंत में आत्यंतिक कल्याण के अधिकारी होते हैं । प्रसाद का त्याग करके शिक्षापत्री भाष्य, वचनामृत, सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण, भक्तचिंतामणी, मुक्तानंद काव्य, निष्कुलानंकाव्य इत्यादिक नंद संतो द्वारा रचित काव्य, कथा-वार्ता, श्रीहरि के चरित्र की विविधपुस्तकों का वांचन-श्रवण-मनन करके भावी पीढी को यहीं परंपरा दीजिये, इसी में कल्याण निहित है ।

आचार्यश्री की महिमा तथा संत, आचार्य के साथ कैसा व्यवहार करना इसका उपदेश

जयमीन वी. पटेल (बोडेली

श्रीजी महाराज ने संवत १८८५ माघ कृष्ण पक्ष द्वादशी के दिन सभी सत्संगियो के लिये एक पत्र लिखवाये । पत्र लिखने वाले मुक्तानंद स्वामी थे, उन्होंने उस पत्र को पद्यात्मक लिखा है –

पद-१

सत्संगी सौ परमविवेकी, गृही त्यागी नरनारी रे,
अति सुखदायक वचन अमारा, लेजो उरमां धारी रे ।
पांडे अवधप्रसाद भत्रीजा, दत्त अमारा कीधा रे,
तेम पांडे रघुवीर अमारा, दत्त पुत्र करी लीधा रे ।
बेऊने गृही त्यागी सौना, गुरु कीधा आज एह रे,
बेउना वचन मां सौने वर्तवुं, मारी आज्ञा छे एह रे ।
पोतानी समृद्धि प्रमाणे, अन्न वस्त्रादिक लावी रे,
ईश्वरजानी सेवा करवी, सेवक भाव जणावी रे ।
गृही त्यागी सौ ना हितकारी, इश्वर अन्तर्यामी रे,
मुक्तानंद कहे एवी रीते, बोल्या श्रीमुख स्वामी रे ।

उपरोक्त पद में जो श्रीहरिने कहा उसका अक्षरश: मुक्तानंद स्वामी ने वर्णन किया है, अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी को गृही-त्यागी का गुरु बनाये हैं इन्हीं आचार्यो की आज्ञा में सभी को रहना है, ऐसी मेरी आज्ञा है । स्वयं की समृद्धि के अनुसार अन्नवस्त्रादिक से आचार्यश्री की सेवा करना ।

पद-२

आपत्काल पडे जो पोताने, तो पण हरे विचारी रे,
ए बडे गुरु नुं करजन लेवुं, मारा वचन उरधारी रे,
तेम बेउना मंदिरमांथी पण, करजन काढवुं लेश रे,
तेम तांबा पीतलना वासण, आचारज ना जे होय रे,
मुक्तानंद कहे श्रीमुख वाणी, मागी न लेवा सोय रे,

स्वामीने लिखा है कि चाहे कितनी आपत्ति आप पडी हो फिर भी आचार्य के पास से अथवा मंदिर में से वस्त्र, आभूषण, वाहन, वर्तन इत्यादि वस्तु मांगना नहीं ।

पद-३ तीसरे पद में स्वामीने लिखा है कि आचार्य के पास से या मंदिर में से पात्र, वस्त्र, घोडा, वाहन इत्यादि वस्तु अपने घर के लिये या दूसरेके काम के लिये कभी नहीं मांगना । कारण यह कि गुरुका या देव का द्रव्य अपने उपयोग में नही लेना चाहिये । अपराधहोता है । यह वात शि.पत्री श्लोक-१५० में भी लिखी है ।

पद-४

पोताने घेर विवाह आदिक, मंगल कारज होय रे,
अम ऊपर कंकोतरी तेनी, क्यारे न लखवी कोई रे,
आचारज के मोटेरा साधु, मंदिरना अधिकारी रे,
ते पर कंकोतरी क्यारे, लखवी नहीं ए विचारी रे,
तेम मरणनी कालावरी पण, हरि गुरु पर न लकाय रे,

यह वात आज के समय में विशेष ध्यान रखने योग्य है । श्रीजी महाराज की आज्ञा है कि गृहस्थो के घर विवाह प्रसंग हो तो लग्न पत्रिका नहीं देनी चाहिये । इसके अलांवा मंदिर के कोठारी को भी नहीं देनी चाहिये ।

आज के समय में बहुत सारे हरिभक्त अपने यहाँ विवाह प्रसंग में या बर्थडे, वास्तु इत्यादि में संतो को आमंत्रण देते हैं, लेकिन यह श्रीजी महाराज की आज्ञा का उल्लंघन है । इसवात का सभी को ध्यान रखना चाहिये ।

पद-५ स्वामी लिखते है कि भगवान या गुरु के साथ लेन देन करने से अपराधहोता है तथा शिष्य को अवगुण आता है ।

पद-६ इस पद में स्वामी लिखते है कि गुरु या भगवान या संत का जब दर्शन करने जाते है तब अपनी गांठ का खर्च करके खाना चाहिये । यह वात श्रीहरिने शिक्षापत्री श्लोक-१५१ में लिखी है । इसका भी सभी को ध्यान रखना चाहिए ।

पद-७ इस पद में स्वामी लिखते हैं कि - जब कोई धर्मादा लेने आता है तो अनाज को नहीं देना चाहिए । जो पहचान का हो और मोहर छाप लेकर आया हो उसी को दान-भेंट देनी चाहिये, अन्य को नहीं ।

पद-८

आ आठे पदमां रे, के जे जे वात लखी,
तेम जे नहिं वर्ते रे, के तो सौ थाशे दु:खी,
ते वचन द्रोही ने रे, के गुरु द्रोही जाणी,
सत्संग थी बाहर रे, के गणवो ते प्राणी,
संवत अष्टादश रे, के पंचाशी वर्षे
माधवदी द्वादशीये रे, के त्री लखी हरखे,
आ पत्री ना पदने रे, के अती प्रगट करजो,
व्हाले मुक्तानंदने रे, के कह्युं तेम उर धर जो,

इन आठो पदो में जो जो वात लिखी है उसके अनुसार जो वर्तन नहीं करेगा वह दु:खी होगा । ऐसे वचन द्रोही को सत्संग में से बाहर समझना चाहिये । यह पत्र संवत १८८५ में माघ कृष्ण द्वादशी को श्रीजी महाराजने लिखवाया है । इस पत्र की वात को जन समाज में प्रगट करने की आज्ञा श्रीजी महाराजने की है ।

इसलिये हम सभी उपरोक्त आठ पदों की वात को जो श्रीजी महाराजने आज्ञा के रुप में लिखाई है उसका पालन करें अन्यथा प्रभु के वचन द्रोह का तथा गुरु द्रोह का पाप लगेगा इस द्रोह से रहित होकर श्रीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त करें ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

छप्पन के साल में दुकाल के समय आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ने समस्त सत्संग को उद्देश्य करके एक पत्र लिखवाया था कि हमारे सत्संगियो को अन्न-वस्त्र-धन की तकलीफ हो तो अहमदावाद मंदिर का संपर्क करे । लेकिन वह मुश्किली वाला समय बीत गया कोई हरिभक्त अपना दुःख-दर्द लेकर आचार्य महाराजश्री के पास नहीं आया । ठीक उसी तरह आज के समय में ५०० तथा १००० की नोटें रद होने से अन्य लोग परेशान हो गये थे । परंतु अपने सत्संगी हरिभक्त सत्संग में से ऐसा गुण प्राप्त किये हैं कि किसी प्रकार की विना घबडाहट के बड़ी शांति से उस परिस्थिति का सामना किये वह भी नियम के भीतर रह कर ।

नोटों की कमी बजार में भले हो परंतु अपने म्युजियम में आनेवाले दर्शनार्थियों में या अभिषेक करानेवालों की संख्या में कोई कमी नहीं दिखाई दे रही थी । म्युजियम के रुपयों की हुंडी में आनेवाली रकम में भी कोई कमी नहीं आई और कोई पुरानी नोट को भी नही डाला ।

वर्तमान में काश्मीर से केनेडा तक शीतलहर का प्रकोप है । म्युजियम में भी इस समय प्राकृतिक वातावरण वैसा ही हो गया है, जिसका लाभ दर्शनार्थी ले रहे हैं । परंतु प.पू. बड़े महाराजश्री ने भी प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेने के लिये अपने बैठने की व्यवस्था बाहर करवा दिये हैं ।

म्युजियम के उद्घाटन हुये ६ वर्ष हो गये फिर भी ऐसा लगता है कि अभी ही उद्घाटन हुआ हो । आगामी मार्च की पहली तारीख फाल्गुन शुक्ल-३ को अर्थात् श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के दिन अपने म्युजियम का ६ वर्ष पूरा हो रहा है तथा सातवां वर्ष लग रहा है । प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी म्युजियम का पाटोत्सव मनाया जायेगा । जिन हरिभक्तों को महापूजा में बैठने का लाभ लेनां हो वे म्युजियम में अथवा दासभाई का संपर्क करके अपने नाम को सुनिश्चित करलें । मुख्य यजमान का रु।. ११०००/- तथा सह यजमान का रु।. ५०००/- रुपये भरकर अपना नाम निश्चित करवा सकते हैं ।

– प्रफुल खरसाणी

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।
मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**
नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-डिसम्बर-१६

रु. २५,०००/-निर्मलाबहन डी. महेता - अमदावाद (कृते वसंतराय गांधी तथा दिनकर राय महेता)
रु. २०,०००/-अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहब के मंडल की तरफ से (कृते कंचनबहन भ. वोरा - नारणपुरा)
रु. ११,०००/-अशोकभाई अमृतभाई वडगाँव - सेटेलाईट ।
रु. ११,०००/-शाह अरविंदभाई डी. कृते नीलाबहन शाह ।
रु. ५,००१/- जिज्ञासा विरेन्द्रकुमार देसाई - नवरंगपुरा - अमदावाद ।
रु. ५,००१/- प्रशांतभाई अनंतराय धोलकिया (यु.एस.ए.)
रु. ५,०००/- मीनाबहन के. जोषी - बोपल - अमदावाद ।
रु. ५,०००/- रसिकभाई हरिवल्लभभाई परीख - एल.ए.यु.एस.ए.
रु. ५,०००/- हर्षदकुमार चंदुभाई पटेल - अमदावाद ।
रु. ५,०००/- ताराबहन भाईलालभाई पटेल - अमदावाद ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि - डिसम्बर-१६

ता. ०२-१२-२०१६	(प्रातः) सुथार रविकुमार जगदीशभाई - झूलासण (चि. आरव के जन्म दिन के निमित्त - कलोल)
०२-१२-२०१६	(सायम) जयेशभाई माणेक चांदखेडा (चि. भाविन के विवाह प्रसंग के निमित्त)
०८-१२-२०१६	गं.स्व. सविताबहन जयंतीभाई पटेल - डांगरवा ।
०८-१२-२०१६	अ.सौ. ममताबहन दिनेशभाई पटेल - पलीयडवाला (प्रे. चेतन स्वामी - गांधीनगर - वर्तमान में यु.एस.ए.)
०८-१२-२०१६	बलदेवभाई एम. पटेल यु.एस.ए. (प्रे. पू. निर्गुणदासजी स्वामी - असारवा)
११-१२-२०१६	अ.नि. कंचनबहन किशनलाल काछीया - लुणावाला (कृते हितेशकुमार किशनलाल काछीया)
१४-१२-२०१६	खीमजी शामजी लालजी हीराणी - मोम्बासा
१८-१२-२०१६	रीटाबहन किशनभाई पटेल - बडुवाला - शिकागो ।
१८-१२-२०१६	शशीबा नारणभाई पटेल वडुवाला - शिकागो ।
१८-१२-२०१६	ज्योत्सनाबहन नारणभाई पटेल - वडुवाला ।
२३-१२-२०१६	देवराज प्रेमजी केराई - एल.ए.यु.एस.ए. शिकागो ।
२५-१२-२०१६	श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा सत्संग समाज
२७-१२-२०१६	श्री भाविन नवीनचंद्र पाठक - अमदावाद (वर्तमान - लंडन)
२८-१२-२०१६	अ.नि. प्रकाशभाई भलाभाई पटेल -यु.एस.ए. कृते संजुल प्रकाशभाई पटेल, दर्श प्रकाशभाई पटेल, प्रे. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए ।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

चारित्र्य निर्माता - श्री स्वामिनारायण भगवान

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

''रोगार्तस्य मनुष्यस्थ यथा शक्ति च मामकैः ।''

प्रिय मित्रो ! शिक्षापत्री का यह संस्कृत वाक्य संभवतः जल्दी समझमें नही आयेगा, परंतु अधोनिर्दिष्ट सत्य घटना वांचकर सभी ख्याल आजायेगा।

जगत के कल्याण हेतु स्वामिनारायण भगवानने उत्तर भारत की यात्रा पूर्ण करके, तीर्थो को पावन करके दक्षिण भारत की तरफ प्रयाण किया । घूमते-घूमते तिरुपति बालाजी पहुंचे। वहाँ से आगे रामेश्वर की तरफ प्रयाण किये। रास्ते में के बनाव बना।

सेवक नाम का एकयात्री रामेश्वर की यात्रा में जा रहा था। उसके साथ अन्य यात्री तथा २-३ उसके शिष्य भी साथ चल रहे थे।

रास्ते कुछ तकलीफ होने से वह बिमार पड़ गया। उसे दस्त होने लगी। संग्रहणी का रोग हो गया। अन्य यात्रियों को ऐसा हुआ कि अब यह नहीं बचेगा, इसलिये वे साथ छोड़कर चले गेय। उसके शिष्य भी साथ छोडकर चले गये।

सेवकराम के पास एक हजार रुपये की सोना मोहर थी। लेकिन सोना-मोहर से सेवा तो हो नहीं सकती थी। कुछ अज्ञानी ऐसा मानते हैं कि संपत्ति हो तो सब कुछ हो सकता है, लेकिन ऐसा होता नहीं। परंतु सहकार के विना संपत्ति कुछ भी नहीं कर सकती। उस सेवकराम के पास एक हजार रुपये की संपत्ति होते हुये भी वह दुःखी हुआ। सेवा न करने वाले के अभाव में रोने लगा।

स्वामिनारायण भगवान उस समय तिरुपति बालाजी का दर्शन करके रामेश्वर की तरफ जा रहे थे। रास्ते में उस साधु को रोते देखकर, उसके पास गये और सान्त्वना देते हुये कहे कि, अब आपको आश्वासन मात्र से काम नहीं चलेगा, आपकी सेवा करनी पड़ेगी। अब वे अपनी यात्रा रोक कर सेवकराम की सेवा करने लगे। प्रतिदिन केले के बगीचे से केला के पत्ते लाकर उसी पर उन्हें सुताते स्नान कराते, धीरे-धीरे वे स्वस्थ हुये। पेट में कुछ अनाज पचने लगा।

बगल के गाँवों से भिक्षा मांग कर ले आते उस में से रसोई बनाकर उन्हें खिलाते। बाद में भिक्षा मांगने जाते। दूसरी बार भिक्षा नहीं मिलती तो उपवास भी होता। सेवकराम अब ठीक होने लगे तो उनहें भूख लगने लगी, वे प्रभु को पैसे देते और वे गाँव में से घी-गुण इत्यादि खरीदकर ले आते भोजन बनाकर खिलाते।

दुनियां में अनेक प्रकार के दुःख है, उसमें से कुछ स्वयं से उत्पन्न किये होते हैं। स्वभाव के कारण हैं। सभी लोग उन्हें छोडकर चले गये, उन के शिष्य भी चले गये। इस में कंजूस स्वभाव होना कारण था। भगवानने भी इतनी सेवा की फिर भी प्रभु से बनवाकर खाते रहे, लेकिन प्रभु को खाने के लिये बचता नहीं था। भगवान निःस्वार्थी थे। उनका जीव के साथ कोई स्वार्थ नहीं रहता। उस जीव को स्वस्थ करके उसी के साथ आगे यात्रा में चले, लेकिन उसके पास करीब एक मन का भार था वह प्रभु से ढोवाता, स्वयं खुले हाथ चलता था।

सुचारित्र्य का निर्माण केवल उपदेश मात्र से नहीं होता, उसके साथ आचरण की जरुरत पड़ती है। उपदेश तथा आचरण दोनो की आवश्यकता जगत में पडती है।

इतिहास साक्षी है कि सहजानंद स्वामीने गुजरात, कच्छ, काठियावाद में जन जागृति का काम किया है। निम्न वर्ग की जातियों को भी उठाने का काम किया है

। समाज में शुभ संस्कारो के सिंचन का कार्य किया है। यह सब कैसे संभव हुआ ?

स्वंय श्रीहरिने इसवात की स्पष्टता की है। उन्होंने मात्र उपदेश नहीं किया लोगों के लिये आचरण भी किया शिक्षापत्री में महाराजने लिखा है कि रोगी व्यक्ति की सेवा जीवन भर करनी चाहिये।

शुष्क उपदेश से समाज में चरित्र का निर्माण नहीं होता । समाज में चरित्र का निर्माण करना हो तो सहजानंद स्वामी की तरह भूखे-प्यासे रहकर समाज में तिरस्कार सहन करके सेवा तथा समर्पण के भाव से उच्च समाज की रचना तथा चरित्र का निर्माण करना संभव है, अन्यथा केवल वात मात्र ही रह जायेगी। आज के समाज में सभी जगह पर चरित्र में न्यूनता ही दिखाई देती है। सभी जगह पर मानवता हीन व्यवहार हो रहा है। नीति, संयम, सेवा का सर्वत्र उपहास हो रहा है। ऐसे युग में चरित्र निर्माण के लिये स्वामिनारायण भगवानने आचरण तथा उपदेश का अवश्य स्मरण करना चाहिए। इससे स्वयं का जीवन तो सुधरेगा साथ में अगल-बगल का समाज भी सुधरेगा। इसकी सुवास दिग-दिगन्त तक फैलेगी।

•

सर्वोपरी महामंत्र

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

प्रिय मित्रो ! आप लोगो को कई बार ऐसा विचार आयेगा कि हमारे पास ऐसी शक्तिशाली वस्तु आ जाती तो हमारा काम बडी सरलता से संपन्न हो जाता। आप को खबर है कि वह प्रबल शक्ति अपने पास ही है, वह क्या है ? मित्रो ! यह वात कोई मन गढंत नही है। यह वात संतो की वार्ता में लिखी गई है । आदि आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज जब छपैया से अमदावाद वापस आ रहे थे, इसकी जानकारी माणसा के नरसीभाई को हुई कि महाराजश्री छपैया से यात्राक रके वापस आ रहेहै, सामने से उनका स्वागत करते हैं।

नरसीभाई तथा कुछ संत एवं हरिभक्त माणसा से खेडा जिला के चिखलोड गाँव तक सामने से गये । खिचलोड में महाराजश्री का दर्शन किये । चरण स्पर्श किये । सभा प्रारंभ हुई । रात्रि का समय था । नरसीभाई को लघुशंका जाना हुआ । वे सभा से थोड़ी दूरी पर लघुशंका करने गये । वहाँ भयंकर काले नाग ने डंस लिया । नरसिंहभाई के मुख में से स्वामिनारायण, स्वामिनारायण की आवाज निकली। आवाज सुनकर सभी लोग सभा में वहाँ पहुंच गये। गाँव के लोग कहने लगे, यहाँ पर बहुत भंयकर नाग रहता है। वह जिसे काट लेता है वह बचता नहीं है। लेकिन नरसीभाई सभी से कहे कि आप लोग धुन कीजिये। महाराजश्री, संत, हरिभक्त सभी धुन करने लगें । आधा घंटा हुआ कि धीरे-धीरे जहर शरीर से उतरने लगा । थोड़ी देर में तो नरसीभाई स्वस्थ हो गये। धुन में सामिल होकर धुन करने लगे।

वहाँ उपस्थित सभी संत भक्त तथा चिखलोडा गाँव के सभी भावुक भक्त बड़े आश्चर्य में हो गये। जिस को भी यह नाग काटा वह आज तक बचा नहीं, तुरंत मृत्यु हो जाती थी। लेकिन नरसीभाई एक दम स्वस्थ बच गये। यह कैसा चमत्कार ?? सभी विस्मय के साथ विचार करने लगे । इस विषय में संतोने लिखा है कि ''स्वामिनारायण'' नाम षडक्षरी अत्यंत बलवान है। इस नाम का स्मरण करने से पापी का भी कल्याण हो जाता है। संतो ने तो इतना तक भी लिखा है कि यदि कोई पूरी आस्था से नाम का स्मरण करे तो काला नाग के जहर की क्या वात आई हुई मृत्यु भी वापस चली जाती है।

षडक्षरी मंत्र महासमर्थ, जेथी थशे सिद्ध समस्त अर्थ।
सुखी करे संकट सर्व कापे, अंते बड़ी अक्षरधाम आपे॥

मित्रो ! अब ख्याल आया कि अपने पास कितना शक्तिशाली पीठ बल है। यदि इसका ख्याल न हो तो जैसे चिन्तामणी हाथ में हो और उसे पत्थर समझ लें तो कौआ उडाने का कार्य तक सीमित रह जायेगा। बाद में पछताने के सिवाय और क्या मिलेगा । इसलिये पीछे से किसी प्रकार का पश्चाताप न रह जाय इसलिये निरंतन अपने परम शक्तिशाली पीठबल का स्मरण-ध्यान करते रहना चाहिये।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "संसार में ३६५ दिन अपना जागरण ही है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

आध्यात्मके विषय में हम कई जन्मों से निद्रा में सो ही रहे है । जागे ही नहीं । जागे भी तो धीरे-धीरे । सबसे बड़ी निद्रा है यदि जागना है भी सोने जैसा है । जिस तरह दीपक निरंतर जलते रखना हो तो बहुत ध्यान रखने की जरुरत होती है । अन्यथा बूझ जायेगा । परंतु हम यह मानने को तैयार नहीं है कि हमारा भी दीपक बुझजाने वाला है । कारण यह कि - हमारा अहं हमें तकलीफ देता है । हम यहाँ पर सभा में बैठे हों तो भी नीद आ जाती है । सत्संग में बैठने के बाद ही मन को शांति मिलती है । निद्रा कब आती है ? जब मन शांत हो जाता है । निद्राधीन व्यक्ति को अगल बगल वाला व्यक्ति जब जगाता है तब वह कहता है कि - हम कहां सो रहे थे । मैं तो जग ही रहा हूँ । अपना मन मानने को तैयार ही नही कि हम सो रहे थे । इसका मतलब कीहम अपने दोष का रक्षण कर रहे है । अपने दोष को स्वीकार करने की आदत डालनी चाहिये । बडी तपस्या के बाद यह मानव शरीर मिली है । सत्संग बडी सतर्कता से कर लेना चाहिये . अपने दोष को स्वयं अपने में देखना चाहिये । हम जगत के प्रपंच में इतना अधिक फंस गये हैं कि दोष दिखाई ही नहीं देता । जो हम कर रहे हैं वह ठीक कर रहे है । जो वस्तु अपने पास नहीं है उसे प्राप्त करने के लिये रात दिन परिश्रम करते हैं और मिल भी जाती है । बाद में उसका महत्व घट जाता है । अर्थहीन लगता है । वह इसलिये कि यह विनाशी सुख है । जिस तरह इन्द्रधनुष आकाश में दिखाई देती है, उसमें सात रंग होता है उसे पकडने जांय तो क्या मिलेगी ? जब तक उसे देखते हैं तब तक वह होती है । दृष्टि के बाहर उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है । देखना बंद करें तो दिखाई देना बंद हो जाती है । लेकिन जगत का मोह मायिक होने से स्थिर नही है । माया का मतलब मन का विचार, मन अर्थात् भीतर की माया । माया बाहर का मन है ।

सत्य क्या चीज है । हम माने या न माने जो भी वस्तु दिखाई देती है वह सत्य नहीं है । उसका अनुभव कैसे होता है ? सत्य के मार्ग पर चलने से मनुष्य सुखी होता है । इसके बाद भी मनुष्य को सत्य में रुचि नहीं है । सत्य सदा एक जैसा रहता है । मनुष्य को विविधता अच्छी लगती है । इसलिये मनुष्य घवडा जाता है । जिस तरह टी.वी. मे क्षण प्रतिक्षण चित्र बदलता रहता है । फिर भी वह आंखो को अच्छा लगता है । क्योंकि उसमें विविधता है । इसी तरह मनुष्य के जीवन में भी परिवर्तन आता रहता है । कहने का मतलब यह कि मनुष्य के मन में भी स्थिरता नहीं है । मनुष्य को अस्थिरता ही अच्छी लगती है ।

सभी को पता है कि भगवान की भक्ति-भजन में सुख है, फिर भी मनुष्य जगत की विविधता में ही फंसा रहता है । जैसे चार-पांच प्रकार के धातु-सोना-चांदी-पीतल-स्टील-माटी के गिलास में पानी भरा हो तो विविधगिलास के दृश्य को देखकर भ्रमित हो जाते हैं । भ्रम ही संसार है । जब तक भ्रम है तब तक संसार है । भ्रम मिटते ही जगत का भव जाल-मृगजाल पहचान में आ जायेगा । भ्रम हटे तो कैसे हटे ? उसकी सरल उपाय है ईश्वर की, आराध्य की, अपने इष्टदेव की भक्ति । भक्ति

साधन है। किसका साधन है। परमात्मा का। परमात्मा भक्ति रुपी साधन से बड़े जल्दी साध्य हो जाता है। संसार में जो आया है वह तो अपना सारा समय सोने में बिता देता है। ३६५ दिन उसके सोने में जाते हैं। यह सब बन्धन है। बाहर के जागरण से कुछ नहीं होगा अन्तर के जागरण से सभी सरलता से साध्य हो जाता है। अपना जागरण आध्यात्म की तरफ हो जाना चाहिये। प्रभु की प्रार्थना में मन होना चाहिए, यही आध्यात्म है। हम प्रार्थना करते हैं ''महा बलवंत माया तुम्हारी'' महाराज से सदा यही मांगना चाहिये और आप सभी का सत्संग एवं भक्ति दिन प्रतिदिन बढती रहे ऐसी महाराज के चरणों में प्रार्थना।

•

धर्म पारायण

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

अपना देश धर्म प्रधान देश है। इस देश में अनेक भगवान का अवतार हो गया है। अनेक संत महात्मा हो गये हैं। जगत में बहुत सारे सुखी देश होंगे। लेकिन वहाँ पर शांति नही है। उसका मुख्य कारण यह है कि वहाँ धर्म नहीं है। जब कि अपना देश शांति प्रधान इस लिये कहा जाता है कि यहाँ पर धर्म की अधिकता है। भारत देश में पूर्व में भी राजा-महाराजा, संत-महात्मा अनेक कष्ट का सहन करके धर्म को कभी नहीं छोडे थे। जो मनुष्य श्रद्धा पूर्वक धर्म का पालन करता है उसकी भगवान रक्षा करते है।

रामायण के अंदर रावण-कुंभकर्ण जैसे पापी के साथ रहने वाले विभीषण को शास्त्रकारोंने भक्त कहा है। विभीषण अनेक कष्टों को सहन करके अपने धर्म की रक्षा की। इसलिये भगवानने उस भक्त की रक्षा करने के लिये अन्य सभी पापियों का बधकिया। और विभीषण को सुखी किया। भागवत में देखे तो ख्याल आयेगा कि जिस तरह कीचड में कमल खिलता है। इतना ही नहीं गरमी, बरसात ठन्ढी का सहन करना पड़ता है। फिर भी वह अपनी कोमलता का त्याग नहीं करता। उसका परिणाम यह होता है कि उसे परमात्मा का सामीप्य मिल जाता है। राक्षस कुल में उत्पन्न प्रहलाद अनेक पीडा का सहन करके अपनी भक्ति पारायणता का परित्याग नही किया, परिणाम स्वरुप भगवान को उनकी रक्षा करने के लिये अवतार धारण करना पड़ा औऱ अविचल पद दिया।

सत्संगिजीवन में भोंयरा गाँव के नाजा जोगिया भक्त हो गये। वे अपने जीवन को भक्ति में समर्पित कर दिया भगवान स्वामिनारायण ने उनके दुःख को देखकर रक्षा किया। इसके बाद नाजा जोगिया ने भगवान की महिमा का गुणगान धूमधूम से कर करने लगा। जो द्वेषी लोग थे वे नाजा जोगिया की सिकायत राजा से किये जो झूठी थी। वे लोग राजा से जाकर कहे कि नाजा भक्त बनकर सभी को गलत मार्ग पर ले जा रहा है। वासुर खाचर बड़ा पापी राजा था कोई थोडा भी गडबड करे तो उसे मृत्यु दंड देता। इसी तरह उसने नाजा से कहा कि यदि तुम्हाहे भगवान सुबह में दर्शन देंगे तो तुझे छोड दिया जायेगा। अन्यथा दूसरे जैसी हालत तुम्हारी थी होगी। वह इतना दृढ निश्चयी था कि भगवान अवश्य आयेगे। भगवान स्वामिनारायण उस समय वडनगर में यज्ञ करवा रहे थे। उस समय वर्तमान जैसी व्यवस्था गमनागमन की नहीं थी। फोन की भी व्यवस्था नहीं थी। फिर भी भगवान जान गये कि मेरे भक्त के ऊपर कष्ट आ पडा है। भगवान ३५० कि.मी. दूर से भी उस भक्त के लिये प्रातः पहुंच गये। प्रभु को देखकर नाजा बहुत प्रसन्न हो गया। प्रातः होते ही वह राजा के पास जाने के लिये तैयार हुआ और राजा का पापाचरण

की वात की तो महाराजने कहा कि मैं ऐसे पापी को दर्शन नहीं दूंगा । जोगिया ने समझाया कि महाराज ऐसा आप नहीं करेंगे तो मेरी भी वहीं हालत होगी जो अन्य की होती है । भगवान ने कहा कि ठीक है मैं उपाय करता हूँ । उसी समय महाराजने राजा को यमपुरी का दर्शन करवाया और यमयातना दिखाई । जब समाधिसे उठा तो सामने प्रभु को देखकर चरण में गिर पडा और क्षमा मांगी । बाद में सत्संगी हो गया । नाजा जोगिया की रक्षा की । इससे यह होता है कि जहाँ धर्म है वही शांति है ।

स्वर्ग में जैसे अमृत है । चिंतामणी में जैसे धन छिपा हुआ है उसी तरह धर्म में सुख छिपा हुआ है । मोक्ष के लिये धर्माचरण आवश्यक है ।

मनुष्य में जब धर्म की प्रधानता होती है तब वही सुखी होता है, वही शांति होती है । जहाँ धर्म की हासता होती है वहाँ पर विपत्ति-अशांति ही चारो तरफ दिखाई देती है । यदि धार्मिक धन विकास में लिया जाय तो शांति का साम्राज्य हो जायेगा । समग्र विश्व दुःखदावानल से इस लिये जल रहा है कि वह भगवान से दूर होकर धर्म का तिरस्कार करके पशुवत धर्म का आचरण कर रहा है ।

ब्रेक बिना की चाहे कितनी भी कीमती गाड़ी हो वह लडकर विनष्ट हो जाती है । इसी तरह धर्म के विना लोग अत्यंत दुःखी होते हैं । भौतिक उन्नति के शिखर पर पहुंचे हुए तत्वचिंतक अपने अभिमान को छोड़कर आध्यात्मिकता की तरफ बढ रहे हैं । उन्हें ऐसा हो रहा है कि भारतीय संस्कृति में ही शांति है । जो धर्मपारायण रहता है उसमें शक्ति का उदय होता है । उसी में श्रीहरि का निवास होता है । जहाँ धर्म वहीं भक्ति रहती है । धर्म रहीत के पास श्रीहरि तथा-धर्म-भक्ति तीनो नही रहते । उनके जीवन में आनंद नहीं रहता । भक्तिमाताने जीवुबा-लाडुबा से कहा कि मैं पतिव्रता नारी हूँ । इसलिये जहाँ धर्म होगा वहीं मैं रहूँगी । श्रीजी महाराजने भी कहा जहाँ धर्म मेरे पिता रहेगे वही मैं रहूँगा । सुख-शांति के लिये धर्म-भक्ति-श्रीहरि का रहना आवश्यक है ।

इसलिये सभी लोग धर्मपरायण होने का प्रयत्न करें ।

•

"परोपकारी संत"

– पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

एकवार मुक्तानंद स्वामी तथा ब्रह्मानंद स्वामी दोनो साथ चले जा रहे थे । एक खेत के किनारे से जा रहे थे वहीं पर पटेल का लड़का गेहूं की पोंक खा रहा था । यह देखकर ब्रह्मानंद स्वामीने मुक्तानंद स्वामी से कहा कि इस बालक का कल्याण करना है । दोनो संत उस बालक के खेत में गये, और कहने लगे कि बेटा ! तूं हम लोगो को पोंक खिलायेगा क्या ? बालक ने हाँ कह दिया । वह बालक मुमुक्षु जीव था । वह तुरंत ताजा पोंक बना कर खिलाया । दोनो संत प्रसन्न हो गये । और कहे कि बोल बेटा तुम्हें क्या चाहिये । बालकने प्रश्न किया कि आपलोगो के पास क्या है जो हमें देना चाहते हैं । संतो ने कहा कि क्या चाहिये । बालकने कहा कि आपको जो देना हो देदीजिये ।

कईबार बालक को मांगना नहीं आता । जब दूसरा कोई कहे तो शरमा जाता है । ऐसे अवसर पर उस बालक की वाणी कैसी निकली । तब उन संतोने कहा कि हमें तो भगवान अच्छे लगते हैं उन्हें तुमको दे दिया । इनकी याद करते रहना । हम स्वामिनारायण भगवान के संत है । हमें तुमने पोंक दिया है । स्वामिनारायण भगवान के संतो को पोंक दिया है यही जीवन भर याद रखना । वह बालक ऐसा ही किया जीवन भर संतो को पोंक खिलाने का आनंद लेता रहा और अंत में जब उसका अन्तकाल आया तब भगवान स्वामिनारायण उसे लेने के लिये स्वयं आये । संतो के उपकार का यह फल है ।

सत्संग समाचार

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में धनुर्मास पर्यंत धुन महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के परम सानिध्यमें पवित्र धनुर्मास में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से एवं स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में प्रसादी के भव्य सभा मंडप में ता. १६-१२-१६ से प्रात: ६-०० से ६-३० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र का धुन प्रारंभ प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से मंगलदीप प्रगट करके किया गया था । धर्म का कार्य तत्काल करना तथा व्यवहार का कार्य विचार कर करना, यह शिक्षापत्री की आज्ञा के अनुसार वर्तन यजमानो द्वारा धुन में देखा गया ।

वर्तमान में आर्थिक व्यवहार धर्म कार्य में बाधारुप नहीं हुआ । प्रतिवर्ष की तरह पूरे महिने की दैनिक धुन अविरत चालू रही । पूरे सभा मंडप में भक्तों की भीड जमी हुई थी । स्वामिनारायण महामंत्र का नाम अलौकिक तथा लाभ दायी है । जिन्होंने धुन का लाभ लिया उन्हे अन्य का ख्याल नहीं आयेगा । अमदावाद मंदिर की तरह अन्य सभी छोटे-बड़े मंदिर में लाखो हरिभक्त पूरे महीने भगवान के नाम का स्मरण करके जीवन को कृतार्थ किये । पूरे धनुर्मास में ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, भंडारी जे.पी. स्वामी, को. जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी इत्यादि संत-पार्षद मंडल तथा सेवा करने वाले हरिभक्तों ने सेवा करके परम कृपालु श्री नरनारायणदेव, धर्मवंशी प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त की । (को.शा. मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम में धनुर्मास धुन महोत्सव

संकल्प सिद्ध महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के पवित्र सानिध्य में जेतलपुरधाम में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा मंदिर के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा. स्वा. पी.पी. स्वामी, स.गु. महंत के.पी. स्वामी के प्रयाससे जेतलपुरधाम में प्रत्येक उत्सव भव्यता से मनाया जाता है । ता. १६-१२-१६ से धनुर्मास प्रारंभ हुआ उसी दिन से प्रात: ६-०० बजे श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन में संत मंडल तथा अपने संस्कृत पाठशाला के विद्यार्थी तथा गाँव के एवं अगल बगल गाँव के हरिभक्त धुन का लाभ लेने पधारते है, राजभोग के दर्शन तक रहते हैं । पूरे महीने तक धुन तथा दैनिक धुन में अनेक हरिभक्त यजमान बनकर महालाभ लेते हैं। महंत स्वामी के.पी. स्वामीने सुंदर आयोजन किया था । (तेजेन्द्रभाई भट्ट)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका में प्रसादी के कष्ट भंदनदेव के समक्ष मारुती यज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी जगदीशप्रसादजी की प्रेरणा से आश्विन शुक्ल-१४ (काली चौदस) को कष्ट भंजन देव के समक्ष मारुतियज्ञ का सुंदर आयोजन किया गया था । जिस में अनेक हरिभक्त लाभ लिये थे । समूह महापूजा का भी आयोजन किया गया था । नूतन वर्ष में ठाकुरजी को भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया था । देव दीपावली को नये नियुक्त मंहत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी का सभा में स्वागत किया गया था । (सत्यसंकल्प स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२,) १७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशधासजी (नारायणघाट) तथा स.गु. छोटे पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में अ.नि.प.भ. महेन्द्रभाई नारणभाई मोतीभाई के स्मरणार्थे गं.स्व. कैलाशबहन महेन्द्रभाई पटेल (उनावावाला गांधीनगर) के यजमान पद पर श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) का १७ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग पर ता. १-१२-१६ से ता. ४-१२-१६ तक श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकी त्रिदिनात्मक कथा शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर संपन्न हुई । प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से १७ वें पाटोत्सव विधिको वेद

की परंपार से संपन्न किया गया । बाद में सभा में पधारे थे । प्रासंगिक सभा में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर) महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर), ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी, शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), महंत स्वामी मूली कांकरिया, सोकली, इडर, बावला इत्यादि धामों से संत वृंद पधारकर अपने अमृतवाणी का लाभ दिये । बाद में प.पू. लालजी महाराजश्रीने समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

गांधीनगर तथा अगल बगल के गाँवो से अनेक हरिभक्त दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे ।

(शा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रयागराज प्रथम वार्षिक पाटोत्सव संपन्न

समग्र हिन्दु धर्म के केन्द्रस्थान प्रयागराज के सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान सर्वावतारी श्री घनश्याम महाराज का प्रथम वार्षिकोत्सव श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी अ.नि. वामनप्रसाददासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा महंत नारायणस्वरुपदासजी के मार्गदर्शन में ता. १६-११-१६ से १८-११-१६ तक धूमधाम से संपन्न हुआ .

इस प्रसंग पर त्रिदिनात्मक कथा का आयोजन किया गया था । रामानुजदास के वक्तापद पर यह कथा संपन्न हुई थी । पोथीयात्रा हनुमानजी के मंदिर से कथा स्थल तक आई थी . इसके साथ त्रिवेणी पूजन, गंगा पूजन, गौ पूजन तथा समूह महा पूजा का लाभ हरिभक्तोंने लिया था । ता. १७-११-१६ को श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार से अभिषेक किया गया था । संतोने अभिषेक तथा श्रृंगार आरती की थी । सभा में पारायण की पूर्णाहुति की आरती पाटोत्सव के यजमानश्री सी.के. पटेल परिवारने किया तथा सभा में चि. दीपकबाई तथा पौत्र आदित्य ओजस आदिने संतो का पूजन किया । अनेक धामों से संतो में स्वा. रघुवीचरणदाजी (उमरेठ) महंत स्वा. देवप्रसाददासजी (अयोध्या) स्वा. परमेश्वरदासजी, स्वा. मुक्तप्रसाददासजी, शा. रामकृष्णदासजी, विष्णु स्वामी (अमदावाद), विष्णु स्वामी (खांभा) इत्यादि संतोने अपनी भावना व्यक्त की थी । ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाया गया था ।

सभा का संचालन शा.स्वा. हरिगुणदासजी (उमरेठ) ने किया । समग्र व्यवस्था कोठारीश्री कमलेश भगतने किया था । यजमान प.भ. चिमनभाई पटेल परिवारने अलौकिक लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था ।

(साधु रामानुजदास - प्रयागराज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु १७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु का १७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव वडनगर मंदिर के महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में तथा वडु गाँव के सहयोग से संपन्न हुआ .

इस अवसर पर ता. १०-१२-१६ से ता. १२-१२-१६ तक श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धकी त्रिदिनात्मक कथा स्वा. विश्वप्रकाशदासजी ने की थी । ता. १०-१२-१६ एकादशी के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री सभा में पधारे उस समय भक्तों ने उनकी आरती पूजा की थी । पाटोत्सव के यजमान तथा पारायण के यजमान अ.नि. मंगुबहन दामभाई पटेल परिवार का जयंतीभाई पटेल मुकेशभाई पटेल परिवार तथा प्रसादी के हनुमानजी पाटोत्सव के यजमान अन्नकूट के यजमान, रसोई के यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी थी । समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

ता. ११-१२-१६ को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । हनुमानजी की आरती उतारकर सभा में पधारे थे । श्री नरनारायणदेव युक मडल तथा यजमान परिवारने पुष्पहार पहनाकर पूजन किया था । प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । आशीर्वाद में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । आशीर्वाद में सभी से कहे कि आप सभी लोग श्री नरनारायणदेव की अचल निष्ठा रखियेगा।

ता. १२-१२-१६ को आशीर्वाद तथा दर्शन का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । सभी को दर्शन तथा आशीर्वाद का लाभ दी थी । यजमान परिवार की बहनों ने प.पू. गादीवालाजी का पूजन-अर्चन की थी ।

हनुमानजी का दर्शन करने पधारी थी । कथा की

पूर्णाहुति शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने की थी ।

समग्र प्रसंग में कोठारीश्री जयंतीभाई, जसुभाई, संजयभाई पटेल, श्री पी.टी. पटेल इत्यादि छोटे-बड़े हरिभक्त तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, बाल मंडल इत्यादि सभी मिलकर सेवा करके सभी की प्रसन्नता प्राप्त किये । (शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी - महंतश्री - वडनगर)

मरतोली गांव में श्री स्वामिनारायण मंदिर रजत जयंती महोत्सव

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से करीब १०० वर्ष पूर्व स्वा. हरिस्वरुपदासजी मरतोली में मंदिर बनवाये थे । उसके बाद शा. स्वा. हरिकेशवदाजी की प्रेरणा से पुनः निर्माण हुआ था । जिसका २५ वर्ष पूरा होने से रजत जयंती महोत्सव धोलका के महंत जगदीशप्रसाददासजी तथा रघुवीरचरणदासजी एवं कृष्णप्रसाददासजी इत्यादि संत मंडल की प्रेरणा एवं मार्ग दर्शन से ता. १६-११-१६ से ता. १८-११-१६ तक जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधपारायण स्वा. वासुदेवचरणदासजी तथा शा. अजयप्रकाशदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई । इस प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे उस समय गाँव के हरिभक्तों ने सुंदर स्वागत किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री ठाकुरजी की आरती उताकर सभा में पधारे थे । सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । अनेकों धाम से संत पधारे थे । महोत्सव के मुख्य यजमान अ.नि. मूलाबापा परिवार तथा पारायण के मुख्य यजमान परिवारने सुंदर लाभ लिया था । समग्र प्रसंग में धोलका मंदिर के कोठारी सत्यसंकल्प स्वामीने सुंदर सेवा की थी ।

(पुजारी - कपिलमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर - धनुर्मास में धुन

भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गोमतीपुर श्री स्वामिनरायण मंदिर में ता. १६-१२-१६ से पूरेमास तक प्रातः ५-१५ से ६-१५ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र नाम की धुन छोटे-बडे हरिभक्त मिलकर किये थे ।(गोमतीपुर मंदिर श्री न.ना.देव युवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर काली गाँव षष्ठ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदास (गांधीनगर) तथा स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) की प्रेरणा से अ.नि. छोटालाल पटेल तथा प.भ. महेन्द्रभाई पटेल इत्यादि परिवार के यजमान पद पर श्री स्वामिनारायण मंदिर काली गाँव का षष्ठ पाटोत्सव ता. १४-११-१६ धूमधाम से संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने सुंदर कथा वार्ता की थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारी गई थी । बाद में प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

(कोठारीश्री - काली गाँव मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर छठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से मुबारकपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर का छठ्ठां वार्षिक पाटोत्सव तथा शाकोत्सव ता. १७-११-१६ को विधिवत संपन्न हुआ ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी की आरती के बाद शाकोत्सव संपन्न किया गया । इसके बाद सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । गाँव के सभी हरिभक्त सेवा करके प्रसन्नता प्राप्त किये ।(शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदास - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कनीपुर पुनः प्राण प्रतिष्ठा

भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) तथा महंत पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा कनीपुर गाँव के हरिभक्तो के सहयोग से श्री स्वामिनारायण मंदिर का जीर्णोध्धार होने पर ता. ८-१२-१६ को मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से की गई थी । मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. ६-१२-१६ से ता. ८-१२-१६ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण की त्रिदिनात्मक कथा शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी । इस प्रसंग पर कालुपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. निर्गुणदासजी, कांकरिया,

नारायणपुरा, भुज, मूली तथा नारायणघाट से संत पधारे थे। गाँव के हरिभक्त छोटी बड़ी सेवा में यजमान बनकर लाभ लिये थे। ता. ८-१२-१६ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी . बाद में कथा की पूर्णाहुति करके अन्नकूट की आरती उतारकर सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

(शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी कोटेश्वर)

सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर प्रार्थना मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा अन्तर्गत विजय स्तंभ स्थापन

भगवान श्री स्वामिनरायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कोटेश्वर गुरुकुल में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में त्रिदिनात्मक मूर्ति प्रतिष्ठा यज्ञ के अन्तर्गत श्री विजय स्तंभ का स्थापन ता. १०-१२-१६ को प्रातः ८-०० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर सभा में स.गु. शा.स्वा. छोटे पी.पी. स्वामी तथा शा.स्वा. रामकृष्णादि संत मंडलने प्रासंगिक उद्बोधन किया था। अन्त में प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद दिया था। (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

कोचरब श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा अंजली मंदिर के महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में यहाँ के मंदिर का ५४ वाँ वार्षिकोत्सव ता. १०-१२-१६ से १४-१२-१६ तक धूमधाम से मनाया गया था। इस प्संग पर पंच दिनात्मक श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया था। शा.स्वा. भक्तिनंदनदास के वक्ता पद पर कथा संपन्न हुई थी। सभा संचालन शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजीने किया था। पाटोत्सव के दिन अनेकधामों से संत पधारे थे, उस दिन महापूजा, अभिषेक, अन्नकूट आरती की गई थी। यजमान परिवार द्वारा कथा की पूर्णाहुति की गई थी। जेतलपुर कालुपुर, अंजलि-महेसाणा, वणझर, आबू से संत पधारे थे। (महंत के.पी. स्वामी - जेतलपुर)

विसनगर गाँव में भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से विसनगर मंदिर द्वारा ता. १६-१२-१६ को भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर अनेक धामों से संत पधारे थे। सभी संतोने सभा में शाकोत्सव का महत्व समझाया। सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आगमन पर उत्सव मनाया गया था। बाद में सभा में महाराजश्रीने शाक का वघार करके सभी को दर्शन का लाभ दिया था। जेतलपुर धाम के पू. पी.पी. स्वामीने शाकोत्सव की महिमा का विस्तार से वर्णन किया। सेवा करने वाले भक्तों का सन्मान किया गया था। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी। करीब ५००० जितने हरिभक्त भोजन का प्रसाद ग्रहण किये थे। समग्र उत्सव का आयोजन कोठारीजी तथा सत्संग समाज द्वारा किया गया था।

(कोठारीश्री, विसनगर)

मांडल गाँव में शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से मांडल गाँव में शाकोत्सव ता. १७-१२-१६ को धूमधाम से किया गया था। जिस में जेतलपुर मंदिर के संत मंडल तथा भक्तिनंदन स्वामीने कथा करके सभी को प्रसन्न किया। शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी द्वारा शाकोत्सव का महत्व बताया गया था। इस प्रसंग पर जेतलपुर, अंजलि, महेसाणा से संत पधारे थे। पाटणी, कालीयाणा, विरमगाँव से संत पधारे थे। महिला मंडल द्वारा रोटी बनाने की सेवा की गई थी। हजारो हरिभक्त प्रसाद ग्रहण करके धन्य हो गये थे।

(शा. भक्तनन्दनदासजी)

महेसाणा (हाइवे) मंदिर में भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा महेसाणा मंदिर के महंत स्वामी के आयोजन से ता. १८-१२-१६ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था। इस प्रसंग पर विविधसेवा करने वाले हरिभक्तों की प्रसंशा की गई थी। संतो ने शाक का वघार किया। सभा में शाकोत्सव की महिमा बताई गई। इस प्रसंग पर रोटी बनाने की सेवा महिलाओंने की। हजारो भक्त

प्रसाद ग्रहण करके धन्य हो गये । जेतलपुर, कालूपुर, अंजलि, लालोडा, हिंमतनगर, सिद्धपुर, वाली (राज.), जमीयतपुरा, बापूनगर, नारणपुरा, सायला, उनावा धाम से संत पधारे थे । (शा. भक्तिनंदनदासजी)

कलोल-पंचवटी मंदिर में भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा मंदिर के महंत स्वामी की देखरेख में भव्य शाकोत्सव ता. २५-१२-१६ को धूमधाम से मनाया गया था । इस अवसर पर संतोने शाकोत्सव की महिमा समझाई थी । इस प्रसंग पर जेतलपुर, अंजली, जमीयतपुरा, आबू रोड, कलोल गुरुकुल, कालुपुर, लालोडा, माणसा, नारणपुरा, उनावा, महेसाणा, मकनसर से संत पधारे थे । रोटी बनाने की सेवा महिला मंडलने की थी । हरिभक्त प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे । आगामी २७-११-२०१७ को कलोल पंचवटी मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की तारीख उद्घोषित की गई थी। (शा. भक्तिनंदनदासजी)

बालवा गाँव में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ता. २९-१२-१६ से ता. २७-१२-१६ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह का पारायण किया गया था । जिसके वक्ता भक्तिनंदन स्वामी थे । इस अवसर पर व्यसन मुक्ति, स्वच्छता अभियान, बेटी बचाओ, मां-बाप की सेवा, साक्षरता अभियान, राजकारण से समाज का नुकशान जैसे मुख्य विषयों का आकर्षण था । संहितापाठ में शा. उत्तमप्रियदासजी विराजमान थे । सभा संचालन शा. हरिप्रकाशदासजीने किया था । इस अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी । साथ में सांख्ययोगी बहने भी पधारी थी । रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किया गया था । जिस में कृष्ण जन्मोत्सव, रुक्ष्मणी विवाह इत्यादि कार्यक्रम किये गये ।

ता. २७-१२-१६ को प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । कथा की पूर्णाहुति करके ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट की आरती करके सभा में श्रीजी साउन्ड परिवार का सन्मान करके सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । सभी हरिभक्त प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये थे । (कोठारीश्री बालवा)

सोलैया गाँव में प्रथम शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सोलैया गाँव में नूतन मंदि का निर्माण होने पर पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से प्रथण वार भव्य शाकोत्सव ता. २०-१२-१६ को किया गया।

इस प्रसंग पर गाँव में आनंद का माहोल बना हुआ था । सभी लोग सहयोग के भाव से कार्यकर रहे थे । शाकोत्सव का प्रारंभ भजन-कीर्तन के साथ प्रारंभ हुआ । बाद में संतो के प्रवचन के बाद प.पू. महाराजश्री के आने के बाद शाक का वघार किया गया तथा सभा में हरिभक्तों को सन्मानित भी किया गया । नूतन मंदिर में सेवा करने वाले भक्तों को पुष्पहार पहनाकर सन्मान किया गया था । पू. पी.पी. स्वामी के प्रासंगिक प्रवचन के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । शाकोत्सव में जेतलपुर, अंजली, महेसाणा, सिध्धपुर, मकनसर, उनावा, माणसा, कालुपुर, कलोल गुरुकुल इत्‌ादि स्थानों से संत पधारे थे । सां.यो. बहने भी पधारी थी । १२००० जितने भक्त शाक का प्रसाद लेकर धन्य हो गये थे । (शा. भक्तिनंदनदास)

सीतापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर संत मंडल की प्रेरणा से सीतापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर का १०१ वाँ वार्षिकोत्सव मार्गशीर्ष शुक्ल-२ को धूमधाम से मनाया गया था । इस अवसर पर ठाकुरजी की पालकी गाँव में घूमने के बाद मंदिर वापस आई थी । मंदिर में ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आरती इत्यादि किया गया था । जेतलपुर की संत मंडली में शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, वी.पी. स्वामी, हरिओं स्वामी, ब्र. के.पी. स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी, भक्तिनंदन स्वामी इत्यादि संतो द्वारा कथा वार्ता की गई थी । यजमान परिवार सोनी रसिकभाई दयालजीभाई परिवार द्वारा संतो का पूजन किया गया था । अन्त में सभी प्रसाद लेकर विदा हुए थे ।

(शा. भक्तिनदनदास)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर का ११ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी के शुभ संकल्प से तथा सां.यो. कमलाबा, कोकिलाबा, उषाबा की शुभ प्रेरणा से रतनपर के प.भ. बाबुभाई अडालजा परिवार के यजमान पद पर सुरेन्द्रनगर के स्वामिनारायण मंदिर का ११ वाँ वार्षिकोत्सव ता. १०-११-१६ से ता. १६-११-१६ तक धूमधाम से मनाया गया । इस उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण शा.स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) ने किया था । संहितापाठ में स्वा. नित्यस्वरुपदासजी थे । इस के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये गये थे । महाभिषेक, अन्नकूट तुसी विवाह, श्री रामप्रतापभाई का विवाह, श्री हरियाग इत्यादि अन्य कार्यक्रम भी किये गये ।

ता. १५-११-१६ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारकर नूतन भोजनालय का भूमि पूजन करके सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

बहनो के आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी, सभी को हार्दिक आशीर्वाद दी थी । अनेक धामों से संत-सां.यो. तथा कर्मयोगी बहने तथा हरिभक्त पधारे थे । सभा संचालन स्वा. त्यागवल्लभदासजीने किया था । समग्र व्यवस्था का आयोजन स्वा. कृष्णवल्लभ स्वामीने किया था ।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में सत्संग

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. भक्तिनंदनदास एवं नीलकंठ स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में शुक्रवार से सोमवार तक दीपावली की भव्य सत्संग सभा हुई । संगीत का कार्यक्रम, भक्तिभजन, धुन, कथा इत्यादि संतो ने किया । इस प्रसंग पर ठाकुरजी के प्रसादी की वस्तुओं की बोली बोली गई थी ।

मारुति यज्ञ, धनतेरस को लक्ष्मीपूजन तथा नूतन वर्ष को भव्य अन्नकूट किया गया था । सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी का आशीर्वाद वीडियो टी.वी. द्वारा सुनाया गया था । हजारों हरिभक्त दर्शन करके कृत कृत्य हो गये । (प्रवीण शाह

श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैयाधाम पारसीपनी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी सत्यस्वरुपदासजी की प्रेरणा से छपैयाधाम पारसीपनी श्री स्वामिनारायण मंदिर में काली चौदश को श्री हनुमानजी का पूजन, दीपावली को लक्ष्मीजी का पूजन-शारदा पूजन तथा सोमवार को ठाकुरजी के अन्नकूट की आरती में यजमान परिवार ने लाभ लिया था । भगवान के सिंहासन को भव्य अलंकृत किया गया था । महंत स्वामीने उत्सवों की परंपरा को भारतीय संस्कृति के अनुसार समझाया । छोटे बालकों को महापूजा की विधिसरलता से समझाई गई । दर्शनार्थी दर्शन का लाभ लेकर धन्य हो गये ।

(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से तथा मंदिर के महंत स्वामी धर्मकिशोरदासजी एवं पार्षद मूलजी भगत की प्रेरणा से दीपावली का प्रसंग जैसे धनतेरस को लक्ष्मीपूजन, शनिवार को मारुती यज्ञ, दीपावली को शारदापूजन, सोमवार को ठाकुरजी की आरती तथा अन्नकूट की आरती की गई थी । इस कार्यक्रम में बहुत सारे यजमान सेवा किये थे । संत-हरिभक्त साथ मिलकर धुन-भजन किये थे । महंत स्वामीने उत्सव की परंपरा समझाई । सभी हरिभक्त अलौकिक दर्शन करके धन्य हो गये । (प्रवीण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) विसनगर शाकोत्सव प्रसंग पर विशाल सभा में दर्शन देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा को संबोधित करते हुये पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर)। (२) सोलैया गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं सभा को संबोधित करते हुये पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर)। (३) वडु श्री स्वामिनारायण मंदिर के देवों के पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा बाल मंडल के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री। (४) महेसाणा मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर बड़ी संख्या में सभा में संत एवं हरि भक्त।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी अमदावाद कालुपुर मंदिर में धनुर्मास के समय प्रात: सभा मंडप की धून में प.पू. लालजी महाराजश्री तथा संत एवं बड़ी संख्या में हरिभक्त श्री नरनारायणदेव का दर्शन करते हुये ।